तांबे का पात्र ही लिया जाता है, इसके अलावा अन्य किसी धातु/पदार्थ से बने पात्र को इस यज्ञ में प्रयोग नहीं करते हैं। इस पात्र का निर्धारित आकार, पर से लम्बाई-चौडाई 14.5 × 14.5 सेंटीमीटर, तली की लम्बाई-चौडाई 5.25 × 5.25 सेंटीमीटर तथा ऊंचाई 6.5 सेंटीमीटर का होता है।

अग्निहोत्र करने के लिए घर या खेत के किसी भी एक निमृित स्वच्छ स्थान पर अग्निपात्र को रखें। चूंकि इसका स्थान बदलने से इसके द्वारा जो निर्वात पाथ ब्रहमाण्डीय क्तियों के बीच बनाया जाता है वह बाधित होता है और इस कारण इसकी कार्यक्षमता में कमी आती है क्योंकि यह अग्निपात्र ब्रहमाण्डीय किरणों द्यकौसमिक रेंजद्वको अपनी ओर आकृषित करता है। एक समय का अग्निहोत्र आठ हजार घन फुट वायुमण्डल को बारह घण्टों तक शुद्ध, स्वच्छ, रोगाणुओं एवं प्रदूषण से मुक्त रखता है।

अग्निहोत्र सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय ही क्यों? सूर्योदय-सूर्यास्त के समय प्रकृति में सबसे नाजुक क्षण होते हैं। इस समय को सन्धिकाल भी कहते हैं। सन्धिकाल का प्रभाव हर जड़-चेतन, वस्तु पर अच्छा या बुरा होता है। हमारे स्वास्थ्य की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण समय है। इस समय पूरे वातावरण में विशिष्ठ तरह के कम्पन उत्पन्न होते हैं। इस समय हमारी सुषुम्ना नाडी चलती है। इस समय हमारे रीर में अनेक रासायनिक परिवर्तन होते हैं और सूर्यास्त के समय जहरीली गैसें, प्रदूषक तत्वों के एवं रोग जनक कीटाणुओं के हमले हम पर होते हैं। अग्निहोत्र ठीक इसी समय पर इसलिए किया जाता है ताकि हम उक्त सभी परेशानियों से बचे रहें और स्वास्थ्य लाभ ले सकें।

अग्निहोत्र में गाय के गोबर के कंडों/उपलों की उपयोगिता: अग्निहोत्र पात्र में गाय के गोबर से बने कंडे/उपलों का प्रयोग किया जाता है। गाय के गोबर में मेन्थाल, फेनाल, अमोनिया, इंडाल तथा फार्मेलिन जैसे अनेक औषधीय तत्व मौजूद होते हैं। गोबर के कंडे/उपले इस प्रकार बनाए जाएं कि इनमें गोबर के अलावा अन्य कोई कूडा-कचरा, कंकड-मिट्टी न लगे। फलस्वरूप इसकी राख से हम दवाइयां भी तैयार कर सकते हैं।

आहुति: गाय का घी व चावल: दो बूंद गाय का घी और पांच ग्राम साबुत चावलों की आहुति देने पर अग्निपात्र से फार्मेलिन रसायन उत्पन्न होकर हवा में फैलता है। जिससे वातावरण रोगाणु मुक्त होता है। इसके अलावा अग्निहोत्र से अन्य कई शुद्धिकारकों का निर्माण होता है। जैसे एथिलिन आक्साइड, प्रापिलीन आक्साइड, फार्मेल्डिहाइड, बीटा-प्रापियो लैक्टोन आदि। इन रसायनों का वायु रूप स्वांस द्वारा शरीर के अन्दर जाकर रक्त को साफ करता है, जिससे दिल, दिमाग एवं फेफड़े मजबूत होते हैं तथा मन का तनाव-दबाव दूर होता है।

अग्निहोत्र की कृषि में उपयोगिता: नित्य अग्निहोत्र करने से एक से तीन एकड़ के क्षेत्रफल में वातावरण शुद्ध होता है और पौधे तेजी से बढ़ते हैं। यज्ञ का प्रभाव पौधों की जड़ों तक होता है। यज्ञ से निकलने वाली गैस में रोगाणुनाक व रोगरोधक गुण होते हैं। इस कारण हमारी फसलों की रोगरोधक क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है और फसलों पर कम से कम रोग व बीमारियों का प्रभाव होता है। फसल के स्वस्थ होने के कारण हमें अधिक उत्पादन प्राप्त होता है।

अग्निहोत्र राख परमशक्ति सम्पन्न औषधि है। इसको हम अपनी खेती में खाद के रूप में भूमि की तैयारी के समय, मिट्टी एवं बीज उपचार के लिए, सिंचाई, निराई-गुडाई के समय, रोग एवं कीट-नियंत्रण के लिए एवं अनाज भण्डारण के समय उपयोग में ला सकते हैं। अग्निहोत्र राख में नाइट्रोजन, फास्फोरस पेंटाक्साइड एवं पोटा की मात्रा म: 0.34, 97 एवं 2.32 प्रतित होती है। नाइट्रोजन व पोटा की मात्रा रासायनिक खादों की तुलना में बहुत कम है। इसलिए यह राख किस प्रकार प्रभावी है, यह वैज्ञानिकों के लिए ोध का विषय है। किसान इस राख के बूते पर रासायनिक खाद एवं कीटनाकों के बिना खेती कर सकते हैं। इससे वह महंगे रासायनिक खाद एवं दवाइयों के खर्च में बचत करके फसल लागत कम कर सकते हैं और अपनी आय बढाकर शुद्ध फसल का उत्पादन भी कर सकते हैं। अग्निहोत्र पात्र की राख से जर्मन विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न औषधियां तैयार की जा रही हैं। इनमें क्रीम, पाउडर, मलहम, टेबलेट, कैप्सूल आदि हैं। इस राख से हम भी अपने घर पर विभिन्न औषधियां तैयार कर सकते हैं, जिससे चिकित्सा पर होने वाले खर्च को कम किया जा सकता है। आइये हम सब मिलकर प्रकृति की रक्षार्थ आगे आऐं - अग्निहोत्र को जन-जन तक पहुंचाऐं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

देवपाल सिंह

जैविक खेती इकाई

जनहित फाउंडेशन

सी-28, शास्त्रीनगर, मेरठ-250002 (उत्तर प्रदेश)

फोन - 0121-2763418, 4004123

E-mail : info@janhitfoundation.org

Website : www.janhitfoundation.org

अग्निहोत्र

किसान का शुभचिंतक

जनहित फाउंडेशन

जनहित फाउंडेशनः एक परिचय

जनहित फाउंडेशन समाजहित में प्रयासरत एक गैर-सरकारी संस्था है। 1998 में स्थापित यह संस्था स्थाई विकास की जरूरत हेतु दबाव समूह बनाकर व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार में संलग्न है। संस्था का मत है कि वर्तमान में प्राकृतिक संपदा को हो रहे सतत् नुकसान को जनसहभागिता द्वारा ही रोका जा सकता है। यह संस्था देश में ख्याति प्राप्त गैर-सरकारी व सरकारी संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित कर पर्यावरण रक्षार्थ ज़मीनी स्तर पर समाधान खोजने में जुटी हुई है। जनहित फाउंडेशन पर्यावरण संबंधी नीतिगत मसलों पर भी देश में अपना एक अहम् स्थान रखती है। मुख्य रूप से युवाओं द्वारा संचालित यह संस्था पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जल संवर्धन एवं जैविक खेती के क्षेत्र में कार्यरत है। संस्था को मेरठ जनपद में प्राकृतिक जल स्रोतों का विस्तृत अध्ययन कर राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई थी। जनहित फाउंडेशन द्वारा देश का दूसरा रेन सेंटर मेरठ में स्थापित कर जल जागृति लाने का एक ठोस प्रयास किया गया है। रेन सेंटर में साधारणजन को जल साक्षर बनाने हेतु विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है।

रसायनों पर आधारित खेती को त्यागने व जैविक खेती को किसानों के बीच लोकप्रिय बनाने में जनहित फाउंडेशन ज़मीनी स्तर पर कार्य कर रही है। कृषि संबंधी सरकारी नीतियों की सकारात्मक आलोचना कर किसानों के अधिकारों के लिए प्रयत्नील रहना संस्था का प्रमुख कार्य है। जैविक खेती के माध्यम से संस्था का प्रयास है कि हरित ान्ति के दुष्परिणामों से बंजर हो चली कृषि भूमि को दोबारा हरा-भरा बनाया जाए। संस्था कई अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के सहयोग से पर्यावरणीय संबंधी मुद्दों पर भी कार्य करती है। जनहित फाउंडेशन आइफॉम, जर्मनी की भी सदस्य संस्था है।

जनहित फाउंडेशन द्वारा कई पुस्तकों व जल एवं जैविक खेती संबंधी द्विमासिक दो मुखपत्रों का भी प्रकान किया जाता है। इन प्रकानों का मकसद साधारणजनों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना, उन्हें पर्यावरण क्षेत्र की नई-नई जानकारियों से अवगत कराना व उन्हें उनके स्थाई भविष्य के प्रति जागरूक बनाना है।

अग्निहोत्रः पर्यावरण एवं खेती में उपयोगी

हमारे पूर्वजों ने सदियों तक अग्निहोत्र किया है। इसका ज्ञान इन्होंने गुरूकुल, धर्म गुरूओं, ग्रंथों एवं अन्य पुस्तकों से प्राप्त कर इससे अनेक लाभ उठाए। इस बात की पुष्टि विभिन्न पुस्तकों के अध्ययन से हो जाती है। लेकिन आज हमने उपभोक्तावाद् एवं आधुनिकता के दौर में अग्निहोत्र को भुला दिया है। यही कारण है कि आज हमारे पर्यावरण में प्रदूषण की समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। एक ओर जहां हमने अपनी खेती में खाद के रूप में रोग एवं कीट-नियंत्रण के लिए रसायनों का प्रयोग किया वहीं बढ़ते औधोगिकरण के कारण भी पर्यावरण को लगातार नुकसान हो रहा है। इस प्रदूषण रूपी जिन्न के कारण धरती से मानव जाति के जीवन का अस्तित्व ही मिट जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। चूंकि इस प्रदूषण रूपी जिन्न ने जीवन की उत्पत्ति के लिए आवश्यक पंच तत्वों 'जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि एवं आकाश' को अपने कब्जे में ले लिया है।

पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य वर्धक फसलोत्पादन व व्यक्तिगत जीवन के चहुंमुखी विकास के लिए अग्निहोत्र एक अनूठा साधन है। इस असाधारण चमत्कार को जर्मनी सहित कई दों के वैज्ञानिकों, चिकित्सकों एवं पर्यावरणविद्ों ने भी स्वीकार किया है और दुनियाभर में इसकी लोकप्रियता वर्तमान समय की मांग के रूप में तेजी से बढ रही है। अग्निहोत्र के प्रति विऋास को हम भारतवासी क्यों अर्जित नहीं कर रहे हैं? जबकि अग्निहोत्र को सभी धर्म-सम्प्रदाय के लोग आसानी से कर सकते हैं हमारे धार्मिक ग्रन्थों में पंचसाधन मार्ग-यज्ञ, दान, तप, कर्म एवं स्वाध्याय की बडी महत्ता बताई गई है। अग्निहोत्र हमें जीवन जीने लायक परिस्थितियां प्रदान करता है। गरीब हो या अमीर, बच्चा या बुजुर्ग, घर का स्वामी या सेवक एवं स्त्रियां-बालिकाएं सभी अग्निहोत्र कर सकते हैं।

आइए हम सब मिलकर अपनी इस प्राचीन धरोहर को पुनः जीवित करें और अपनी दैनिक दिनचर्या में अग्निहोत्र को सम्मिलित करें। आखिर हम सभी को इस धरती पर सुखद जीवन व्यतीत करने के लिए अग्निहोत्र को एक जनान्दोलन का रूप देना होगा।

अग्निहोत्र हेतु सामग्रीः

1. निर्धारित पिरामिडाकार का ताम्र-पात्र।
2. अपने हर के आस-पास के पचास किलोमीटर के क्षेत्र की दैनिक सूर्योदय व सूर्यास्त के समय की वार्षिक समय-सारणी जो कि दैनिक समाचार पत्रों में, इंटरनेट से, धार्मिक पुस्तकों व जंत्री आदि से प्राप्त की जा सकती है।
3. एक समय अग्निहोत्र करने के लिए सिर्फ दो बूंद गाय का घी व पांच ग्राम साबुत चावल चाहिएं। एक माह के लिए 50 ग्राम गाय का घी व 300 ग्राम साबुत चावल पर्याप्त रहते हैं।
4. केवल गाय के गोबर के शुद्धता से बनाए गए एक इंच मोटाई के दो कन्डे/उपले एक समय का अग्निहोत्र यज्ञ करने के लिए चाहिएं।
5. अग्नि प्रज्जवलित करने के लिए पूजा वाले कपूर की टिकिया या गाय का घी लगी रूई की बाती एवं माचिस चाहिए।

अग्निहोत्र करने की प्रक्रियाः- सूर्यास्त के समय से दस मिनट पूर्व अग्निहोत्र पात्र में कन्डे/उपले जालीदार तरीके से इस प्रकार लगाएं ताकि बीच में खाली स्थान रहे। इस खाली स्थान में कपूर की सहायता से अग्नि प्रज्जवलित कर लेते हैं। अग्निहोत्र के समय तक अग्नि तैयार हो जाती है, तब सूर्योदय या सूर्यास्त के समय से दो मिनट पूर्व एक हाथ की हथेली पर पांच ग्राम चावल रखकर दो बूंद गाय के घी से चावलों को भिगो लें। तत्पमृात इन चावलों के दो बराबर हिस्से कर लेते हैं। इस प्रकार दो आहुतियां तैयार हो जाएंगी। जैसे ही घड़ी में अग्निहात्र का समय हो पांचों उंगलियों से आहुतियों को मवार उठा लें तथा बुलंद आवाज में निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करते हुए वेदी के मध्य में आहुति देते हैं। अग्निहोत्र का प्रारम्भ हमो सांय काल से किया जाना चाहिए न कि प्रातः काल से।

सूर्यास्त के समय निम्न दो मंत्रों का उच्चारण करें और आहुतियां दें।

पहला मंत्र : **अग्नेय स्वाहाः** 'पहली आहुति अग्नि में छोड़ दें'
अग्नेय इदम् न मम्।

दूसरा मंत्र : **प्रजापतये स्वाहाः** 'दूसरी आहुति अग्नि में छोड़ दें'
प्रजापतये इदम् न मम्।

सूर्योदय के समय निम्न दो मंत्रों का उच्चारण करें और आहुतियां दें।

पहला मंत्र : **सूर्याय स्वाहाः** 'पहली आहुति अग्नि में छोड़ दें'
सूर्याय इदम् न मम्।

दूसरा मंत्र : **प्रजापतये स्वाहाः** 'दूसरी आहुति अग्नि में छोड़ दें'
प्रजापतये इदम् न मम्।

इस प्रकार दोनों आहुतियों के जलने में दो मिनट लगेंगे। इससे धुंआ निकले या जलती हुई लौ, इस समय दो मिनट तक कमर की रीढ़ को सीधी रखकर बैठें और दृष्टि जलती हुई आहुति पर रखें। आहुति भस्म हो जाने पर उठ जाएं।

पिरामिड ताम्र-पात्रः उर्जा का भण्डारः जिस पात्र में अग्निहोत्र यज्ञ किया जाता है वह पात्र विऋ का एक आमृर्य है। अग्निहोत्र यज्ञ के लिए